ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप
(Pattern of Rural Settlement)

बस्तियों के प्रतिरूप — बस्तियों के आकृति के अनुसार बस्तियों के प्रतिरूप को निश्चित किया जाता है, जिसके अंतर्गत मकानों और मार्गों की स्थिति के क्रम और व्यवस्था का विवरण देता है। वास्तव में प्रतिरूप गाँव की आकृति को बतलाता है, जो प्रदेश में उसकी स्थिति पर निर्भर करता है। यह बस्ती की आकारिकी बतलाने वाला प्रमुख अंग है। यह बस्तियों के आंतरिक स्वरूप को भी बतलाता है। मुख्यतः बस्तियों के प्रतिरूप भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होते हैं।

बस्तियों के प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं —

1. भौतिक कारक — (i) बसाव स्थान (ii) जल स्रोतों (iii) भूमि का ढाल (iv) स्थलाकृति/धरातलाकृति (v) वर्षा (vi) दलदली भूमि की स्थिति
2. सांस्कृतिक कारक — जातीय व्यवस्था, सामाजिक रीति-रिवाज, शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी का स्तर
3. धार्मिक कारक — धार्मिक विश्वास व्यवस्था
4. राजनीतिक कारक — ऐतिहासिक 'आक्रमण', शासन व्यवस्था
5. खेतों का प्रतिरूप — खेतों की जोत की आकृति स्थिति
6. सड़कों एवं गलियों का नियोजित ज्यामितीय प्रतिरूप

इत्यादि प्रमुख कारक हैं, जो बस्तियों के प्रतिरूप एवं आकृति पर अपना प्रभाव डालते हैं।

बस्तियों के प्रतिरूप एवं प्रकार में सम्बंध -

ग्रामीण बस्तियों का प्रतिरूप उसके प्रकार से भी संबंधित है। सामान्यतः दोनों को निर्धारित करने वाले कारक भी एक ही होते हैं। ग्रामीण बस्तियों का प्रतिरूप ऐसी बस्तियों को बतलाता है, जो सघन या अर्द्ध सघन होती हैं, जबकि प्रकीर्ण (Scattered) या अर्द्ध प्रकीर्ण बस्तियों के प्रतिरूप स्पष्ट नहीं होते। ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप के अनुसार उसके प्रकार को निम्न रूप में देखा जा सकता है -

बस्ती प्रतिरूप	बस्ती प्रकार
1. वृत्ताकार, तारानुमा	सघन (कहीं भी उपयुक्त परिस्थिति मिलने पर)
2. वर्गाकार, आयताकार	अर्द्ध सघन (सिंचाई सुविधा एवं अनुकूल बसाव वाले क्षेत्र में)
3. रेखीय	अर्द्ध-प्रकीर्ण बस्ती (नदियों के बाढ़ वाले क्षेत्र में)
4. मनकाकार	प्रकीर्ण (बाढ़ के प्रतिरूप क्षेत्र में)

ग्रामीण बस्तियों के विभिन्न प्रतिरूप निम्नलिखित हैं -

1. रेखीय प्रतिरूप (Linear pattern) - इस प्रकार का प्रतिरूप सड़क नदी या नहर के किनारे-किनारे बसे हुए मकान की बस्तियों में पाई जाती है। जैसे - पूर्वी तटीय मैदान, निम्न गंगा मैदान, देहरादून की घाटी आदि जैसे क्षेत्रों में ऐसा प्रतिरूप पाया जाता है।

2. चौक पट्टी प्रतिरूप (Checker Board) - मैदानी भागों में दो मार्गों के मिलने के स्थान पर जो गाँव बसने प्रारंभ होते हैं उन गाँवों की गलियाँ मार्गों के साथ मेल खाती आयताकार प्रतिरूप में बनने लगती हैं जो परस्पर लंबवत एवं समानांतर होती हैं। सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं ये प्रायः आकार में बड़े होते हैं, जैसे - उत्तरी भारत गंगा यमुना दोआब आदि क्षेत्र।

3. अरीय प्रतिरूप (Radial) - बस्ती में एक चौराहे पर विभिन्न दिशाओं से मार्ग आकर मिलते हैं तथा चौराहे के गाँव से बाहर अन्य कई गाँवों के लिए मार्ग जाते हैं। उदाहरण के लिए भारत चीन, पाकिस्तान की अधिकांश बस्तियाँ। सामान्यतः गाँवों के मध्य में बाजार या कुँआ होता है।

4. तारा प्रतिरूप (Star pattern) - अरीय प्रतिरूप वाले गाँव विकसित होकर बाहर जाने वाले मार्गों पर फैलते जाते हैं। गाँव के निकट मकान अधिक एवं दूर जाने पर मकानों की संख्या कम होने लगती है, जैसे - मध्य गंगा मैदान, तराई क्षेत्र।

5. वृत्ताकार प्रतिरूप (Circular pattern) - किसी झील कुँआ, तालाब जमींदार का मकान किला आदि के चारों ओर बस्तियाँ अधिक बसाव के कारण फैल जाती हैं एवं वृत्ताकार रूप धारण कर लेती है। ये बस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं - (i) नाभिक बस्ती - जिसके केंद्र में मुख्य घर होता है। (ii) नीहारिकीय (Nebular) - जिसके केंद्र में चौपाल, तालाब, पंचायत घर, बट वृक्ष

आदि। उदाहरण – ऊपरी दोआब, हॉल – यमुना क्षेत्र पंजाब आदि के कुछ भागों में ऐसी बस्तियां मिलती हैं।

6. तीर प्रतिरूप (Arrow pattern) – ये बस्तियां किसी अंतरीप के सिरे पर या नदी के नुकीली मोड़ पर वाले होते हैं। अग्र भाग में मकानों की संख्या कम एवं पृष्ठ भागों में बढ़ती जाती है। उदाहरण – कन्याकुमारी का अंतरीप, गंडक, बूढ़ी गंडक के मोड़ पर बसी बस्ती।

7. पंखा प्रतिरूप (Fan pattern) – गांव के एक सिरे पर किसी आकर्षण स्थान तालाब, नदी का किनारा, सड़क बाग – बागीचा, महत्त्वपूर्ण दीवार, पूजा-स्थल होने पर बस्तियां अर्द्ध गोलाकार रूप में पंखे के आकृति के समान बन जाती हैं। डेल्टाई एवं पर्वतपादीय प्रदेशों में भी ऐसे प्रतिरूप मिलते हैं। उदाहरण – गोदावरी, कृष्णा महानदी की डेल्टा में, हिमालय के पाद प्रदेश में।

8. आयताकार प्रतिरूप – गांवों के खेतों का आकार प्रायः आयताकार होता है, फलतः मार्ग भी आयताकार बनते हैं। अधिकांशतः कृषि बस्तियां आयताकार होती हैं। उदाहरण – U.P, बिहार में सघन एवं संयुक्त बस्तियों वाले गांव।

9. त्रिभुजाकार प्रतिरूप (Triangular pattern) – जब कोई सड़क या नहर किसी दूसरी सड़क या नहर से मिलती है, परंतु उसको पार नहीं करती है, तो ऐसे स्थान पर त्रिभुजाकार प्रतिरूप का विकास होता है।

10. सीढ़ी प्रतिरूप (Terrace pattern) – पर्वतीय ढालों पर, ढाल के अनुसार विभिन्न ऊंचाइयों पर मकान बनते हैं, जो सीढ़ीनुमा प्रतिरूप के होते हैं। उदा

समोच्चरेखीय प्रतिरूप (Contour Pattern) भी कहते हैं। जैसे - हिमालयी - पर्वतीय ढालों पर पश्चिमी घाट के ढालों पर इस प्रतिरूप की बस्तियां विकसित हुई हैं।

11. वर्गाकार प्रतिरूप (Square Pattern) - वर्गाकार और आयताकार प्रतिरूप एक दूसरे के पूरक हैं। गांव का बसाव स्थान भौतिक आकर्षण एवं विकर्षण दोनों ही कारणों से वर्गाकार रूप ले लेता है। ऐसा गांव सड़क मार्ग के चौराहे पर स्थित होते हैं। उदाहरण - पश्चिमी उत्तर प्रदेश बिहार के भागलपुर, गया जिले में विकसित प्रतिरूप

12. खोखला वर्गाकार (Hollow Square Pattern) - जब वर्गाकार प्रतिरूप वाले गांव का अंदर का भाग खाली होता है और चारों तरफ वर्ग के बाहर की ओर मकान बने होते हैं बीच में मंदिर, तालाब, मस्जिद बाग आदि होते हैं।

13. मालाकार प्रतिरूप (String Pattern) - नदी, नहर सड़क के दोनों किनारे पर एक रेखा में मकान बन जाते हैं जो मालाकार प्रतिरूप की होती है। जैसे- बिहार के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में।

इन सब के अतिरिक्त भी ग्रामीण क्षेत्रों में कई प्रकार के प्रतिरूप पाए जाते हैं जिसमें L-आकार का प्रतिरूप, अनियमित प्रतिरूप, बहुभुजीय प्रतिरूप, अर्धवृत्ताकार प्रतिरूप आदि।

इस प्रकार बस्तियों के प्रतिरूप किसी विशेष प्रक्रिया या कारक का ही प्रतिफल होता है।